DATE: 19/09/19 B+
PAGE NO.

# अलंकार
(आभूषण)

[ अलं करोतिइति अलंकार :]

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्व को अलंकार कहते है।
अलंकार का शाब्दिक अर्थ है — 'आभूषण'।
जिस प्रकार आभूषणों से शरीर की शोभा बढ़ती है उसी प्रकार अलंकारों से काव्य की शोभा बढ़ जाती है। अलंकारो के प्रयोग से काव्य मनोहारी हो जाता है।

## अलंकार के भेद :—

अलंकार के मुख्यत: दो भेद माने गये है. परन्तु सामान्य अर्थों में अलंकार के तीन भेद होते है —

1. शब्द अलंकार
2. अर्थ अलंकार
3. उभय अलंकार

## 1) शब्द अलंकार :—

जब कुछ विशेष शब्दों के कारण काव्य में चमत्कार

e-COPY

DATE: / / PAGE NO. B+

उत्पन्न होता है तो वहाँ 'शब्दालंकार' होता है।
शब्द विशेष के कारण कविता में सुन्दरता आ जाती है।

→*← शब्दालंकार के भेद :—

1. अनुप्रास अलंकार
2. यमक अलंकार
3. श्लेष अलंकार

→*← अनुप्रास अलंकार के भेद :—

i) छेकानुप्रास अलंकार
ii) वृत्यनुप्रास अलंकार
iii) श्रुत्यनुप्रास अलंकार
iv) अन्त्यानुप्रास अलंकार
v) लाटानुप्रास अलंकार

(1) **अनुप्रास अलंकार :—** जहाँ समान वर्णों की आवृत्ति बार-बार होती है वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

अनुप्रास अलंकार के भेद :—
i) छेका अनुप्रास अलंकार
ii) वृत्या अनुप्रास अलंकार
iii) श्रुत्या अनुप्रास अलंकार
iv) लाटा अनुप्रास अलंकार



DATE: / / PAGE NO. B+

v) अन्त्या अनुप्रास अलंकार

(i) **छेका अनुप्रास अलंकार :—** जहाँ स्वरूप एवं क्रम से व्यंजनो की आवृत्ति एक बार हो वहाँ 'छेका अनुप्रास अलंकार' होता है।

**उदाहरण :—** रीझी - रीझी रहसि - रहसि, हसि-हसि उठे।
साँसे भरी आसू भरी कहत दायि-दायि॥

(ii) **वृत्या अनुप्रास अलंकार :—** जहाँ 'एक वर्ण की' आवृत्ति बार-बार हो वहाँ 'वृत्या अलंकार' होता है।

**उदाहरण-** (i) तरनि-तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाये
(ii) रघुपति - राघव राजा राम
(iii) कारि कुर कोकिल कहा का बैर काढ़ती है

(iii) **श्रुत्या अनुप्रास अलंकार :—** जब कण्ठ, तालु, दन्त किसी एक ही स्थान से उच्चरित होने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है, वहाँ श्रुत्या अनुप्रास होता है।



Scanned by CamScanner

DATE: 20/09/19
PAGE NO.
B+

**उदाहरण:-** तुलसीदास सीदत निसिदिन
देखत तुम्हारी निठुराई।

(iv) **लाटा अनुप्रास अलंकार :—** जहाँ एकार्थक शब्दों की आवृत्ती हो और अन्वय करने पर अर्थ अलग – अलग हो जाये तो वहाँ 'लाटा अनुप्रास' होता है

**उदाहरण:-** (a) पूत कपूत तो क्यूँ धन संचय ?
पूत सपूत तो क्यूँ धन संचय ?

(b) तेगबहादुर हाँ वे ही थे गुरु पदवी के पात्र समर्थ।
तेगबहादुर हाँ वे ही थे गुरु पदवी थी जिनके अर्थ।।

(v) **अन्त्या अनुप्रास अलंकार :—** जहाँ अन्त में तुक मिलती हो वहाँ पर अन्त्या अनुप्रास अलंकार होता है।

**उदाहरण:-** कहत नटत, रीझत, खिझत, मिलत खिलत लजियात।
भरे भौंन में करत हैं, नैनन ही सौं बात।।

e-COPY

DATE: / /
PAGE NO.
B+

② **यमक अलंकार :-**

यमक शब्द का अर्थ होता है दो
जब एक ही शब्द ज्यादा बार प्रयोग हो परन्तु हर बार अर्थ अलग – अलग आये वहाँ 'यमक अलंकार' होता है।

**उदाहरण:-** (i) कनक कनक ते सौ गुनी,
मादकता अधिकाय।
वा खाए बौराए जग,
या पाए बौराए।।

(ii) काली घटा का घमण्ड घटा।
(iii) कहै कवि बेनी, बेनी ब्याल की चुराई लिनी
(iv) तीन बेर खाती थी, वे तीन बेर खाती हैं।
(v) रखशी मेरे हृदय की, रखशी तुम पर न्यौछावर।
(vi) माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

③ **श्लेष अलंकार :—** जब कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो परन्तु उनके अर्थ अलग – अलग हो, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

e-COPY

Scanned by CamScanner

उदाहरण :- रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून
पानी गये न उबरे, मोती, मानस, चून

श्लेष अलंकार दो प्रकार का होता है—
(i) सभंग श्लेष
(ii) अभंग श्लेष

(i) **सभंग श्लेष :—** जहाँ शब्द विशेष से श्लेषार्थ निकालने के लिये जोड़ना या तोड़ना पड़े वहाँ पर सभंग श्लेष होता है।

उदाहरण :- अजौं तर्यौना ही रह्यो, श्रुति सेवत इक रंग
नाक बास बेसरि लह्यो, बसि मुक्तन के संग

(ii) **अभंग श्लेष :—** जहाँ पर शब्द को खण्डित किये बिना ही एक से अधिक अर्थ निकले वहाँ पर 'अभंग श्लेष' होता है।

उदाहरण :- (i) रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न उबरे, मोती मानस चून॥

(ii) मधुबन की छाती देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ।





## (2) अर्थअलंकार :—

अर्थ के कारण जहाँ पर काव्य में चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ अर्थअलंकार होता है।

अर्थअलंकार के भेद तो अनन्त हैं किन्तु आचार्यों ने इसकी संख्या 125 बतायी है। इनमें कुछ विशेष है—

(i) उपमा
(ii) रूपक
(iii) उत्प्रेक्षा
(iv) अतिशयोक्ति
(v) भ्रांतिमान
(vi) संदेह
(vii) अन्योक्ति
(viii) दीपक
(ix) विभावना
(x) अप्रस्तुत प्रशंसा
(xi) विरोधाभास

(i) **उपमा अलंकार :—** उपमा का अर्थ होता है 'तुलना'।
जब किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु से की जाये तो वहाँ पर 'उपमा अलंकार' होता है।

→ उपमा अलंकार का शाब्दिक अर्थ होता है—
उप — निकट
मा — निर्णय



Scanned by CamScanner

उदाहरण- सागर सा गम्भीर हृदय हो
गिरि सा ऊँचा हो जिसका मन

## — उपमा अलंकार के अंग :—

(a) उपमेय
(b) उपमान
(c) वाचक शब्द
(d) साधारण धर्म

(a) **उपमेय** — जिसकी उपमा दी जाये।

(b) **उपमान** — जिससे उपमा दी जाये।

(c) **वाचक शब्द** — उपमेय और उपमान में समानता दिखाने के लिये जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसे वाचक शब्द कहते हैं।

(d) **साधारण धर्म** — उपमेय तथा उपमान के बीच के गुण को साधारण धर्म कहते हैं।

**उदाहरण:**— पीपर पात सरिस मन डोला

उपमान — पीपर पात; वाचक शब्द — सरिस; उपमेय — मन; गुणधर्म (साधारण धर्म) — डोला





उपमा अलंकार के दो भेद होते हैं—

(i) पूर्ण उपमा (पूर्णोपमा)
(ii) लुप्त उपमा (लुप्तोपमा)

(i) **पूर्णोपमा** :— जब उपमा के चारो अंग अलंकार में विद्यमान हो तो वहाँ पर पूर्ण उपमा अलंकार होता है। Exp:— पीपर पात सरिस मन डोला।

(ii) **लुप्तोपमा** :— जहाँ पर उपमा के चारो अंगो में से कुछ का लोप हो जाये वहाँ लुप्त उपमा या लुप्तोपमा कहते हैं।

Exp- (a) कनक लता सी प्राण प्रिय।

उपमान — कनक लता; वाचक शब्द — सी; उपमेय — प्राण प्रिय

(b) कल्पना सी अतिशय कोमल।

उपमान — कल्पना; वाचक शब्द — सी; उपमेय — अतिशय कोमल

PAGE NO. B+

(ii) **रूपक अलंकार :—** जहाँ पर 'उपमेय' और 'उपमान' में एकरूपता दिखाई जाये वहाँ रूपक अलंकार होता है। जहाँ पर गुण की अत्यन्त समानता दिखाने के लिये उपमेय में ही उपमान का अभेद आरोपित कर दिया हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

**उदाहरण :-**
(i) पायो जी मैने राम रतन धन पायो।
(ii) चरण-कमल बन्दौं हरिराई।
(iii) मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहूँयो।
(iv) जीवन की चंचल सरिता में फेंकी मैने मन की जाली।
फस गयी मनोहर भावों की मछलियाँ सुधर भोली भाली।।

जहाँ; जीवन, मन भाव 'उपमेय' है जबकि सरिता, जाली, मछलियाँ उपमान है।

(v) सुख चपला सा दुःख घन में उलझा।

(iii) **उत्प्रेक्षा अलंकार :—** जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाये वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
इसमें कुछ वाचक शब्द प्रयुक्त होते हैं

e-COPY

DATE 24/09/19 B+
PAGE NO.

जो इसकी पहचान बनाते हैं।

जैसे :— मनु, मानो, मनहु, जनु, जानो, जनहु, ज्यों इत्यादि

उदाहरण :- (i) सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात
मनहु नीलमनि सैल पर, आतप पर्यो प्रभात

(ii) पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोकों से।
मानो झूम रहे हैं तरु भी, मंद पवन के झोकों से।।

(iii) हरिमुख मानो मधुर मयंक।

(iv) सखि सोहत गोपाल के उर गुंजन की माल
बाहरि लसति मनो पिये दावानल की ज्वाल

(iv) **अतिशयोक्ति अलंकार :—**

जहाँ किसी वस्तु का इतना बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाये कि लोक सीमा का उल्लंघन होने लगे तो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है

उदाहरण :- (i) हनुमान की पूँछ में लग न पाई आग
लंका सारी जरि गई गए निशाचर भा

e-COPY

(ii) देख लो साकेत नगरी है यही।
स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही॥

(iii) कढ़त साथ ही म्यान तें, असि रिपु तनते प्राण।

(iv) आगे नदियाँ पड़ी अपार,
घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार,
तब तक चेतक था उस पार॥

(v) बालों को खोलकर मत चला करो दिन में
रस्ता भूल जायेगा सूरज।

Note :- अतिशयोक्ति = अतिशय + युक्ति
अ + उ

(v) **भ्रान्तिमान अलंकार :-** इस अलंकार में अत्यधिक समानता के कारण एक वस्तु में दूसरी वस्तु का भ्रम होता है; वहाँ 'भ्रांतिमान अलंकार' होता है।

उदाहरण :- (i) किन्सुक कुसुम जानकर झपटा,
भौंरा शुक की लाल चोंच पर।
तोते ने भी चोंच चलायी,
जामुन का फल उसे समझकर॥

(ii) नाग सुण्ड को तितर समझकर,
घुसने लगा विषैला साँप।
काली ईख समझ विषधर ने,
उठा लिया तब गज ने आप॥

(iii) पायँन महावर देन को नाईन बैठी आय।
फिर-फिर जानि महावरी, एड़ीन मींडत जाय॥

(vi) **संदेह अलंकार :-** जहाँ किसी वस्तु की विषय में, संशय उत्पन्न होता है; वहाँ 'संदेह अलंकार' होता है।

(i) सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है,
कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही कि सारी है॥

(vii) **विभावना अलंकार :-** जहाँ पर 'कारण' के बिना कार्य हो जाये, वहाँ 'विभावना अलंकार' होता है।

उदाहरण :-
(i) बिनु पग चले सुने बिनु काना।
कर बिनु करम करे विधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बाणी वकता, बड़ जोगी॥

e-COPY
e-COPY
Scanned by CamScanner